UGC Approved Journal No. 49321 Impact Factor : 2.591
Shodh Drishti (An International Peer Reviewed Refereed Research Journal), Vol. 9, No. 14.1, September, 2018 ISSN : 0976-6650

दरभंगा राज में ध्रुपद गायकी की परंपरा, परिचय एवं उसका इतिहास

डॉ0 कृष्ण कुमार सिन्हा
विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, कर्पूरी ठाकुर कॉलेज, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण (बिहार)

सारांश

ध्रुपद शब्द ध्रुवपद का संक्षिप्त नाम है, जिसे बोल–चाल की भाषा में बिगड़ा हुआ शब्द माना जा सकता है। ध्रुव शब्द का अर्थ निश्चितता से लिया जा सकता है। अर्थात किसी भी गीत के शब्द में कहीं न कहीं भूत काल, वर्त्तमान काल तथा भविष्यकाल का वर्णन होता है, जिसमें इस शैली के गीत पद पर निश्चित घटना को दर्शाते हैं, जिन्हें संगीतज्ञ सुर–लय–ताल में निबद्ध कर इस गायकी का प्रदर्शन करते आ रहे हैं। प्राचीन काल में ध्रुपद गायकों को कलावंत कहते थे। धीरे–धीरे ध्रुपद गायकों के भेद उनकी चार वाणियों के नाम इस प्रकार से हुए :– (1) गोबरहार–वाणी, (2) खंडहार–वाणी, (3) डागुर–वाणी, (4) नोहार वाणी। इस गायन शैली का सम्बंध वैदिक काल से है परंतु चौदहवीं शदी ई0 के आरम्भ से उन्नीसवी शदी के पूर्वार्ध तक इस शैली की लोकप्रियता अत्याधिक सराहनीय रही।

विभिन्न कालों में राजव्यवस्था एवं समुदाय में इसके विकसित रूप कैसे रहे हैं प्रदर्शित होते हैं। दरभंगा राज में स्थापित ध्रुपद गायकी का स्वरूप एवं उसकी विशेषता काफी लोकप्रिय रहा। इस घराने की ध्रुपद शैली में विशेष रूप से नोम–तोम के मंत्र उच्चारण होते हैं जिनका स्वरूप ईश्वर के ब्रह्म नाद से है।

मन्त्र – "ओम अंग तरंग तोम तरण
तरानी तोम हरि नारायणी।"

दरभंगा राज में ध्रुपद गायन मिथिला संगीत का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र रहा। यहाँ का गायन एक विशेष रूप में अपना परम्परा स्थापित किया। प्राचीन एवं आधुनिक संगीत के आधार पर दरभंगा राज के सम्पूर्ण मिथिला क्षेत्र में "पनिचोभ", "अमता", "मधुबनी" और "पंचगछिया" मुख्य रूप से संगीत के एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहे।

ध्रुपद गायन शैली में अमता घराना की प्रमुख ख्याति पूर्ण इतिहास राधा–कृष्ण तथा कर्त्ता राम से पद्मश्री रामचतुर मल्लिक एवं सियाराम तिवारी के संगीतमय योगदान काफी लोकप्रिय हुए।

कूट–शब्द :–

ध्रुवा, विरूद, तेनक, सुबन्धु, अष्टछाप, नोम–तोम, प्रबन्ध, चर्तुदण्डी, पाणि, कलावंत।

परिचय और इतिहास :–

भारतीय संगीत की शास्त्रीय और शाश्वत परम्परागत और प्रमाणिक ध्रुपद शैली दरभंगा राज में स्थापित ध्रुपद गायकी का स्वरूप रहा है और इसकी विशेषता दीर्घ अवधि में देश–प्रांत की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक चेतना को प्रभावित किया है। दरभंगा में ध्रुपद गायकी का सूत्रपात और इसके दिशा–विकास की प्रक्रिया बड़ी विस्तृत रही। संगीत प्रेम ने इस राजदरबार के दिग्गज कलाकारों को देश के कई जगहों से जोड़ रखा।

दरभंगा राज का अमता स्थान जो गाँव के रूप में सुविख्यात रहा है। बिहार में ध्रुपद गायकी का तीर्थ माना जाता है। इस भूमि ने कई निष्णात ध्रुपदियों को जन्म दिया है। इस दरबार में ध्रुपद गायक के साथ–साथ पखावज वादक के स्थान भी सिद्धस्त श्रेणी में प्राप्त किये हैं, क्योंकि पखवाज ध्रुपद गायन शैली के ताल पक्ष का वादन अंग है।

यहाँ ध्रुपद शैली के प्रकांड विद्वान देश–विदेश में इस राजदरबार का नाम रौशन किया है। दरभंगा राज के ध्रुपद गायक मुख्य रूप से अमता ग्राम के मल्लिक गायकों के नाम से जाने गए। इस घराने में पंडित रामचतुर मल्लिक आधुनिक काल के अंतिम में प्रसिद्ध ध्रुपदिया हुए साथ हीं इस घराने के सम्बंधी पंड़ित सियाराम तिवारी इस आधुनिक चरण के ध्रुपद शैली के सिद्धहस्त गायक श्रेणी में अपना स्थान बिहार के अलावा कई प्रान्त देश–विदेश में उच्च शिखर पर रखें।

The ARTist International: A Multidisciplinary Journal Dedicated to All Artist
Vol. 3, Issue 1 – 2019
ISSN: 2581-5393

दरभंगा राज में संगीत विधा

डॉ0 कृष्ण कुमार सिन्हा[1]

[1]*विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, कर्पूरी ठाकुर कॉलेज, मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण (बिहार)*

सारांश

यहाँ की संस्कृति में मुसलमान के सभ्यता निवास करने लगे जिससे संगीत सभ्यता में बदलाव आने लगा था परंतु उनके आधारशिला मिथिला संस्कृति के आधार पर थें। कहा जाता है कि जब मुसलमान मूर्ति पूजा का विरोध करने लगे थें उस समय मोहम्मद गोरी कुतुबुद्दीन को अपना प्रतिनिधि बनाये थें जो कुतुबुद्दीन दरभंगा के राज से सम्बंधित रहे। उसी समय मुसलमान को दरभंगा राज के संगीत कलाकार कला से आकृष्ट किये। उसके पश्चात् अलाउद्दीन खिलजी बादशाह बने तो उनके दरबार में यहाँ के संगीत और संगीतज्ञ विशिष्ट स्थान पाये।

कूट-शब्दः मिथि, पुराण, द्वारबंगा, सम्प्रदाय, चारी, मिथिलाक, पल्लवित, लोकनि।

दरभंगा राज में संगीत

दरभंगा राज की स्थापना एवं उसकी ऐतिहासिक परम्परा का उद्गम प्राचीन काल से समझा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्राचीन काल में राजा मिथि के नाम पर जो मिथिला राज था जिसकी राजधानी दरभंगा थी वहीं कालांतर में चलकर दरभंगा राज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। दरभंगा राज को मिथिला का हीं दूसरा नाम दिया जा सकता है। मिथिला शब्द का सम्बंध राजा मिथि से है, अर्थात् मिथि राजा के नाम पर हीं मिथिला राज का नामाकरण माना जा सकता है। इस संदर्भ में कई वेद-पुराण, ग्रन्थ इसकी पुष्टि करते हैं। बाल्मिकीय रामायण और मार्कण्डेय पुराण, विष्णु-पुराण आदि में मिथिला की चर्चा हुई है।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved.

UGC Approved Journal No – 47168
(IIJIF) Impact Factor - 3.234

ISSN 2231 – 413X

SHODH PRERAK

A Multidisciplinary Quarterly International Peer Reviewed Refereed Research Journal

Chief Editor:
Dr. Shashi Bhushan Poddar

Editors:
Dr. Reeta Yadav
Dr. Pradeep Kumar

Volume VIII **Issue 3** **April** **2018**

Published By:
VEER BAHADUR SEVA SANSTHA
LUCKNOW
Printed at:
F/70 South City, Rai Bareilly Road, Lucknow-226025
E-mail: shodhprerak@gmail.com, shodhprerakbbau@gmail.com
Cell NO.: 09415390515, 09450245771, 08960501747

Cite this Volume as S/P, Vol. VIII, Issue 3, April 2018

- आसियान एक अध्ययन 447-450
  उदय भान यादव, यू.जी.सी.-एस.आर.एफ., राजनीति विज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
- स्वातन्त्र्योत्तर पौराणिक नाटकों में आधुनिक बोध (मिस्टर अभिमन्यु नाटक के संदर्भ मे) 451-453
  डॉ. प्रशान्त कुमार राय, सत्यम नगर कालोनी (फेज 1), अखया खण्ड (ख), पहड़िया, वाराणसी
- नागार्जुन के बलचनमा में दलित चेतना 454-456
  अभय कुमार, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना
- सविनय अवज्ञा आन्दोलन के दौरान मिथिला में काँग्रेस की सक्रियता ..... एक सिंहावलोकन 457-459
  नन्दन कुमार, शोध छात्र इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
- छायावादोत्तर काल की राष्ट्रीयता 460-464
  डॉ. रवि रंजन, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, पयहारी महाराज जी कॉलेज, आरा
- महात्मा गांधी के सपनों का भारत 465-467
  डॉ. संतोष कुमार, स्नातकोत्तर दर्शन शास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार
- कालिया की कथा, कुछ कथोपकथन 468-470
  प्रभाकर कुमार, एम.ए., नेट (यू.जी.सी.), शोध-छात्र, हिन्दी विभाग (बी.आर.ए.बी.यू., मुजफ्फरपुर)
- नारीवाद आन्दोलन 471-472
  डॉ. वंदना गोविन्दम्
- भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि पर निर्भरता 473-477
  कुमुद कुमारी, इतिहास विभाग, जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा (बिहार)
- उपभोक्तावाद और टीवी.काग्रक्रमों की हिन्दी 478-481
  डॉ. मेनका कुमारी, पूर्व शोधार्थी, हिंदी विभाग, पटना विश्वविद्यालय
- महिला सशक्तिकरण : चुनौतियां (भारत ने विशेष सन्दर्भ में) 482-484
  डॉ. स्मिता पाण्डेय, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, पं.दी.द.उ.रा.म.पी.जी. कॉ. राजाजीपुरम लखनऊ
- भारतीय राजनीति में महिलाओं की भूमिका 485-487
  डॉ. अनामिका
- समाज सुधारक एंव नवजागरण के अग्रदुत के रूप मे राजा राममोहन राय का विश्लेषणात्मक अध्ययन 488-490
  डॉ. सतीश कुमार, पूर्व शोध छात्र, इतिहास विभाग, जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 12, December 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

RIGHT TO EDUCATION - LEGAL SERVICES INDIA

Dr. Parmanand Tripathi
Head of Department (B.Ed.)
L.n.d. college, Motihari,Bihar
Pin Code-845401

ABSTRACT

Present Act has its history in the drafting of the Indian constitution at the time of Independence but is more specifically to the Constitutional Amendment of 2002 that included the Article 21A in the Indian constitution making Education a fundamental Right. This amendment, however, specified the need for a legislation to describe the mode of implementation of the same which necessitated the drafting of a separate Education Bill. It is the 86th amendment in the Indian Constitution. A rough draft of the bill was prepared in year 2005AD. It caused considerable controversy due to its mandatory provision to provide 25% reservation for disadvantaged children in private schools. The sub-committee of the Central Advisory Board of Education which prepared the draft Bill held this provision as a significant prerequisite for creating a democratic and egalitarian society. Indian Law commission had initially proposed 50% reservation for disadvantaged students in private schools. The Right of Children to Free and Compulsory Education Act or Right to Education Act (RTE) is an Act of the Parliament of India enacted on 4 August 2009, which describes the modalities of the importance of free and compulsory education for children between the age of 6 to 14 years in India under Article 21A of the Indian Constitution. 'Compulsory education' casts an obligation on the appropriate Government and local authorities to provide and ensure admission, attendance and completion of elementary education by all children in the 6-14 age group. With this, India has moved forward to a rights based framework that casts a legal obligation on the Central and State Governments to implement this fundamental child right as enshrined in the Article 21A of the Constitution, in accordance with the provisions of the RTE Act.17

Keywords: Indian constitution, Education a fundamental Right,Children.

INTRODUCTION

Education is a fundamental human right and essential for the exercise of all other human rights. It promotes individual freedom and empowerment and yields important development benefits. Yet millions of children and adults remain deprived of educational opportunities, many as a result of poverty.Normative instruments of the ... legal obligations for the right to education. These

IJMRA

IJRSS

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH IN SOCIAL SCIENCE

(ISSN:2249-2496)

Journal Homepage: http://www.ijmra.us,
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International
Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed
at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A.,
Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

editorijmie@gmail.com
info@ijmra.us
www.ijmra.us

स्व. प्रमाणित
परमानन्द त्रिपाठी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 3, March - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http: www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

TEACHER EDUCATION - ISSUES AND PROBLEMS IN TEACHING

Dr. Parmanand Tripathi
Head of Department (B.Ed.)
L.n.d. college, Motihari,Bihar
Pin Code-845401

ABSTRACT

Education has a very significant role in developing an individual to the level of perfection, drawing out the best citizen from him, best Indian from him. Education is a lifelong process and without the help of a teacher it will be incomplete. Teacher preparation has been a subject of discussion at all levels, from the government, ministries, regulatory bodies, schools, to teachers themselves. No nation develops beyond the quality of its education system, which is highly dependent on the quality of its teachers. Some problems are plaguing the system of teacher education so the teachers should be given the most appropriate tools during and after their training, including content knowledge and skills as well as teaching methodology to be able to do their work professionally. This full length paper highlighted the major problems and some suggestions to resolves these problems of teacher education, these suggestions will be helpful to educationist, Policy Makers, universities and colleges to improve the quality and standard of teacher education.

Keywords: Education, Teacher Education, Problems and suggestions

INTRODUCTION

A teacher educator (also called a teacher trainer) is a person who helps other people to acquire the knowledge, competences and attitudes they require to be effective teachers. Several individual teacher educators are usually involved in the initial or ongoing education of each teacher; often each specialises in teaching about a different aspect of teaching (e.g. educational ethics, philosophy of education, sociology of education, curriculum, pedagogy, subject-specific teaching methods etc.). Not every culture has a concept that precisely matches the English term 'teacher educator'.Even where the concept exists, the range of roles that is covered by the term varies significantly from country to country.In some traditions, the term 'teacher trainer' may be used instead of 'teacher educator'. A teacher educator may be narrowly defined as a higher education professional whose principle activity is the preparation of beginning teachers in universities and other institutions of teacher education, such as teacher colleges. A broader definition might include any professional whose work contributes in some way to the initial education or the continuing professional development of school and other teachers.Even within

ISSN 0972-1894

VOLUME-76 NUMBER-83 Jan-Mar, 2018

The Hindustan Review

UGC APPROVED

UGC Journal No-62908 REGISTERED

An International Research Journal of BCARDS

A Quarterly Referred Research Journal of Buddist Centre for Action Research and Development Studies

UGC Approved Journal No - 62908; Social Science : Arts and Humanities, Serial No- 278

स्त्रियों की स्थिति और समानता: महात्मा गाँधी के विचारों में

डॉ० राजेश कुमार सिन्हा
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-विभागाध्यक्ष,
दर्शनशास्त्र विभाग, एल०एन०डी०
कॉलेज मोतिहारी, (पूर्वी चम्पारण)

संस्कृत में नारी (स्त्री) शक्ति के लिए अनेकों शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिनमें दो प्रमुख हैं-1. अबला और 2. महिला। अबला का अर्थ है दुर्बल, जिसकी रक्षा दूसरों को करनी पड़ती है अर्थात् रक्षणीय, तथा महिला शब्द का अर्थ है महान, बहुत बड़ी ताकतवाली। भारत में कहीं भी अबला समिति देखने को नहीं मिलती है। परन्तु महिला-समिति सर्वत्र पायी जाती है। अर्थात् भारतीय स्त्रियों ने स्वयं की परीक्षण कर अपने लिए महिला अर्थात् महानशक्ति शब्द का चयन किया है। महिला शब्द से ही भारतीय स्त्रियों की स्थिति, स्त्रियों के संबंध में भारतीयों का (राय) विचार और उनकी अपेक्षाएं स्पष्ट होती है।

दूसरी ओर 'स्त्री' शब्द संस्कृत के 'संतृ' धातु से बना है, जिसका अर्थ है विस्तार करना, फैलाना। अर्थात् प्रेम को कुल दुनिया में फैलानेवाली शक्ति स्त्री है। प्रेम का विस्तार, प्रेम की व्यापकता स्त्री द्वारा होगी। स्त्री ही समाज का तारण करने वालजी तारण-शक्ति है।

भारतीय समाज में नारी (स्त्री) के संबंध में कहा गया है कि 'यत्र नार्येस्तु पूज्यते रमंते तत्र देवता' अर्थात् कि 'जहाँ नारी की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है' यह भारतीय समाज का स्त्री के संबंध में 'आदर्श' रहा है। लेकिन व्यवहारिक स्तर पर स्त्री के संबंध में भारतीय समाज में ही कहा गया है। कि 'पिता रक्षित कौमारे भर्त्ता रक्षित यौवने, पुत्राश्य स्थाविरे काले नास्ति स्त्रीणां स्वतंत्रता' अर्थात् 'कौमार्यावस्था में पिता स्त्री की रक्षा करते हैं' जवानी में वह पति के संरक्षण में रहती है तथा वृद्धावस्था में पुत्र उसकी देखभाल करते हैं। इस प्रकार स्त्रियों के लिए स्वतंत्रता नहीं है।

अतः भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति के संबंध में 'आदर्श' और 'व्यवहार' में विरोध का संबंध प्रतीत होता है। इस विरोधाभास संबंध के बीच नारी की वास्तविक स्थिति क्या है, और क्या होना चाहिए। इसका स्पष्टीकरण हम मुख्य रूप से महात्मा गाँधी में विचारों में नारी की स्थिति और लैंगिक समानता (स्त्री-पुरूष समानता) संबंधी अवधारणा के आलोक में करेंगे।

गाँधीवाद और राहुल सांकृत्यायन : एक समीक्षात्मक अवलोकन

डॉ० राजेश कुमार सिन्हा
एसोसिएट प्रोफेसर–सह–विभागाध्यक्ष
दर्शनशास्त्र विभाग
एल०एन०डी० महाविद्यालय, मोतिहारी।

आधुनिक भारतीय चिन्तन की प्रवृतियों के आधार पर कहा जा सकता है कि आधुनिक भारतीय चिंतन सामूहिक चिन्तन या सहचिंतन का परिणाम है। इसी परिणाम के फलीभूत आज के भारतीय चिन्तन में महत्वपूर्ण समस्याओं के संदर्भ में महात्मा गाँधी के विचार अर्थात् गाँधीवाद के प्रति महापंडित राहुल सांकृत्यायन के दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का एक सार्थक प्रयास है।

राहुल सांकृत्यायन के अनुसार एक व्यक्ति के रूप में गाँधी जी आदरणीय एवं सम्मानीय है। लेकिन वैचारिक स्तर पर वे एक कमजोर क्रांतिकारी सिद्ध होते हैं। "भागों नहीं दुनियां को बदलो" नामक उपन्यास में कहा गया है कि – "गाँधी जी जोंकों को भी रखना चाहते हैं और यही जोंके हत्या की जड़ है।" (पृष्ठ–151)।

आगे बतलाया गया है कि गाँधी जी द्वारा बताये गये रास्ते से सर्वाधिक लाभ पूँजीपतियों एवं जमींदारों को हुआ है। किसान–मजदूरों को इनके अनुपात में नगण्य लाभ हुआ। यद्यपि राहुल सांकृत्यायन इस बात को स्वीकार करते हैं कि हिन्दुस्तान की जनता को जागरूक बनाने, उसे अंग्रेजों के विरूद्ध संगठित होकर लड़ने में तथा भूखी जनतो को अपने पैर पर खड़ा करने में गाँधीजी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लेकिन इसके बावजूद उनकी सबसे बड़ी दोष, जमींदारों एवं कारखानेदारों को बचाये रखने की इच्छा थी। "वह इनसे इतना ही चाहते है कि किसानों और मजदूरों को अपने को माँ–बाप समझे। सवाल यह है कि माँ–बाप महलों में रहेंगे या झोपड़ी में, बीस हजार की कार में चलेंगे या पैदल, लड़के–लड़कियों के व्याह में दस–बीस लाख खर्च करेंगे या धर्म विवाह करेंगे। शिमला, नैनीताल, दार्जलिंग, उटकमंड, बम्बई, कलकता, दिल्ली, बनारस में बिड़ला हाऊस बनाकर रहेंगे कि दस रूपये के भाड़े की कोठरी में। दूसरी बात गाँधीजी कहते थे कि कल–कारखाने न हों। हमे चरखा चाहिए। लेकिन वह भी होनेवाला नही। लोहे के जमाने से आदमी लौटकर पत्थर के जमाने में नहीं जा सकता। वह (बिड़ला) पाँच

Pramāna
International Refereed
(Peer Reviewed)

UGC List No.41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-32(v)(Apr.-Jun. 2019) (Page No. 315-317)

The Rise of Nationalism in India

Dr. Subodh Kumar
Associate Professor,
Head Deptt.of History,
L.N.D. College, Motihari
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

Abstract

Nationalism is an ideology based on the premise that the individual's loyalty and devotion to the nation-state surpass other individual or group interests. Indians nationalism developed as a concept during the Indian independence movement which campaigned for independence from British rule. Indian nationalism, which is inclusive of all the people of India, despite their diverse ethnic, linguistic and religious backgrounds. Actually Indian nationalism binds the whole nation in its ambit.

Key-Words : Nationalism, Industrials Revolution.

Nationalism is an ideology based on the premise that the individual's loyalty and devotion to the nation-state surpass other individual or group interests. Indians nationalism developed as a concept during the Indian independence movement which campaigned for independence from British rule. Indian nationalism, which is inclusive of all the people of India, despite their diverse ethnic, linguistic and religious backgrounds. Actually Indian nationalism binds the whole nation in its ambit.

The second half of the 19th century witnessed the full flowering of national political consciousness and the growth of an organized national movement in India. The year 1885 (the year of the formation of the Congress) marks the beginning of a new epoch in Indian History. Indian National Congress was founded in December 1885 by seventy-two political workers. All the 72 delegates were the intellectuals of India and had passion for the country. It was the first organized manifestation of Indian nationalism on an all-India scale. The leaders of the Congress advocated dialogue and debate with the Raj administration to achieve their political goals. Distinct from these moderate voices (or loyalists) who did no preach or support violence was the nationalist

movement, which grew particularly strong, radical and violent in Bengal and in Punjab. It was due to the fact that from the initial phase of British raj, Bengal has witnessed extreme exploitation. Notable but smaller movements also appeared in Maharashtra, Madras and other areas across the south.

To crush the Nationalist feelings of the peoples of Bengal, in 1905, the then viceroy, Lord Curzon, divided the province into two parts- Western Bengal dominated by Hindu population and the Eastern Bengal dominated by Muslim majority population. The reason behind the partition that was officially announced was that the Bengal province was too large to be administered by a single governor and therefore was partitioned on administrative purpose. But the real reason behind the partition was completely political and not administrative. This policy was completely motivated by the principle of "Divide and Rule". The partition provided an impetus to the religious divide and rule, as a result of that, All India Muslim League and All India Hindu Mahasabha was

Pramāna
International Refereed
(Peer Reviewed)

UGC List No.41241
Impact Factor : 4.005
Research Journal (ISSN : 2249-2976)
Year-8, Issue-32(v)(Apr.-Jun. 2019) (Page No. 315-317)

The Rise of Nationalism in India

Dr. Subodh Kumar
Associate Professor,
Head Deptt.of History,
L.N.D. College, Motihari
B.R.A. Bihar University, Muzaffarpur

Abstract

Nationalism is an ideology based on the premise that the individual's loyalty and devotion to the nation-state surpass other individual or group interests. Indians nationalism developed as a concept during the Indian independence movement which campaigned for independence from British rule. Indian nationalism, which is inclusive of all the people of India, despite their diverse ethnic, linguistic and religious backgrounds. Actually Indian nationalism binds the whole nation in its ambit.

Key-Words : Nationalism, Industrials Revolution.

Nationalism is an ideology based on the premise that the individual's loyalty and devotion to the nation-state surpass other individual or group interests. Indians nationalism developed as a concept during the Indian independence movement which campaigned for independence from British rule. Indian nationalism, which is inclusive of all the people of India, despite their diverse ethnic, linguistic and religious backgrounds. Actually Indian nationalism binds the whole nation in its ambit.

The second half of the 19th century witnessed the full flowering of national political consciousness and the growth of an organized national movement in India. The year 1885 (the year of the formation of the Congress) marks the beginning of a new epoch in Indian History. Indian National Congress was founded in December 1885 by seventy-two political workers. All the 72 delegates were the intellectuals of India and had passion for the country. It was the first organized manifestation of Indian nationalism on an all-India scale. The leaders of the Congress advocated dialogue and debate with the Raj administration to achieve their political goals. Distinct from these moderate voices (or loyalists) who did no preach or support violence was the nationalist

movement, which grew particularly strong, radical and violent in Bengal and in Punjab. It was due to the fact that from the initial phase of British raj, Bengal has witnessed extreme exploitation. Notable but smaller movements also appeared in Maharashtra, Madras and other areas across the south.

To crush the Nationalist feelings of the peoples of Bengal, in 1905, the then viceroy, Lord Curzon, divided the province into two parts- Western Bengal dominated by Hindu population and the Eastern Bengal dominated by Muslim majority population. The reason behind the partition that was officially announced was that the Bengal province was too large to be administered by a single governor and therefore was partitioned on administrative purpose. But the real reason behind the partition was completely political and not administrative. This policy was completely motivated by the principle of "Divide and Rule". The partition provided an impetus to the religious divide and rule, as a result of that, All India Muslim League and All India Hindu Mahasabha was